JPSC Main Exam 2017

Kushmanda Distance Learning Program for JPSC Main Exam 2017

ENGLISH LITERATURE (Paper II)
What you will get

- **Complete Study Material (Updated 2017)**
- **Practice Questions Paper**
- **Expert Support (through email kushmandaeducation@gmail.com)**
- **English Medium**

Fee-6000/- Rs

HINDI LITERATURE (Paper II)
What you will get

- **Complete Study Material (Updated 2017)**
- **Practice Questions Paper**
- **Expert Support (through email kushmandaeducation@gmail.com)**
- **Hindi Medium**

Fee-3500/- Rs

Fee has to be paid by Cash on Delivery or **NET BANKING** or by DD/Cheque for the full amount favoring **KUSHMANDA EDUCATION SERVICES PVT LTD** payable at PANIPAT .Trust, quality and reliability the keywords for **KUSHMANDA EDUCATION SERVICES PVT LTD** will remain our guiding force for both Preliminary as well as Main Exam.

KUSHMANDA EDUCATION SERVICES PVT LTD

C-138, TDI CITY, PANIPAT (HARYANA)

Helpline: 08607570992, 09728926678

Or call us 08607570992,09728926678

Hkej xhr

"उद्धव! बेगि ..... बिनु मीनु ।। 1 ।।

शब्दार्थ : बेगि – शीघ्र; जाहु – जाओ; बललमिन – गोपियां; दाहु – दाह, विरह की आग; पावक – आग; तूलमय – रूईसी; समीर – हवा; मसम – भस्म; तिय – स्त्री; धीर – धैर्य; प्रवीन – चतुर; मीन – मछली।

संदर्भ – प्रसंग : प्रस्तुत पद ` 'सूरदास' के 'भ्रमर गीत' शीर्षक से लिया गया है। इसमें गोपियों की विरह – कथा को दूर करने के लिए कृष्ण इस उद्धव को ब्रज भेजने की योजना बनाई गई है। कृष्ण उद्धव को शीघ्र ब्रज जाने के लिए प्रेरित कर रहे हैं।

व्याख्याः सूरदास लिखते हैं कि श्री कृष्ण उद्धव को यथाशीघ्र व्रज गमन के लिए प्रेरित करते हुए कहते हैं। हे उद्धव! तुम बहुत जल्दी ही ब्रज के लिए प्रस्थान करो। ब्रज की गोपियाँ विरह में दुःखी हो रही है उनको मेरा संदेश दे कर उनका कष्ट दूर करो। उनका रूई सम हल्का शरीर विरह की तपन और विरह श्वास से जलने को है, किन्तु आँखों से लगातार बहती हुई आँसू से जलने से बच जाता हैं। इसी तरह उनका शरीर अब तक कुछ चैतन्य हैं। यदि ऐसी विपरीत अवस्था में उन्हें सान्त्वना न दी गई तो उनका धैर्य टूट सकता है। तुम मेरे चतुर सखा हो, इस विषय में और अधिक क्या बताऊँ। तुम्हें स्वंय विचार कर निर्णय लेना चाहिए कि पानी की मछली पानी के अभाव मे कैसे जीवित रह सकती हैं।

विशेषः

1. गोपियों के विरह संदर्भ की उद्धव से चर्चा है।
2. गोपियों के प्रेम का चित्रांकन है।
3. वियोग शृंगार रस का सुन्दर परिपाक हैं।
4. 'सुरति संदेश सुनाय' , 'सुर सुमति' आदि में अनुप्रास अंलकार है।
5. ब्रजभाषा का सरल स्वरूप है।
6. अनुकूल आकर्षक लयात्मकता है।

"गोकुल सबै ..... तजै गुनरासी" ।। 2 ।।

शब्दार्थ : उपासी – उपासक; बसत – रहते हैं; धरननि – चरणों की; रस रासी – रस में डूबी; गरासी – ग्रसित; गुनरासी – गुण का खजाना।

संदर्भ – प्रसंगः प्रस्तुत पंक्तियो सूरदास के 'भ्रमरगीत' शीर्षक से ली गई हैं। इसमें कृष्ण के मथुरा चले जाने और उद्धव के गोकुल आने के बाद व्रज की विरही स्थिति का मार्मिक चित्रण किया गया है।

व्याख्याः सूरदास ने कृष्ण के मथुरा चले जाने के बाद गोपियों के द्वारा ब्रज की स्थिति का वर्णन करते हुए लिखा गया है। कृष्ण के अभाव में सारा गोकुल उदास हो गया है। उद्धव के द्वारा योग – साधना की बात कहने पर गोपियाँ स्पष्ट करती हैं कि योग साधना करने वाले शिव नगरी काशी में निवास करते हैं। हमारे लिए योग साधना बेकार है। यद्यपि कृष्ण हमें छोड़ कर अनाथ बना गए हैं किन्तु हम तो उनके चरणों की ही दासी है। जिस प्रकार चाँद को राहु ग्रस अवश्य लेता हैं, किन्तु चाँद अपनी शीतलता नहीं छोड़ता है। इसी प्रकार हम सब विरह में घायल है, किन्तु कृष्ण प्रेम – में अटल है। हमसे क्या भूल हुई है, कि उन्होंने प्रेम–भजन को छोड़ कर योग साधना के लिए लिखा है। सूरदास लिखते हैं कि कृष्ण के प्रेम की विरहणी गोपियाँ कहती है कि कौन प्रेम वियोगनी होगी जो गुण सम्पन्न कृष्ण को छोड़ कर मुक्ति चाहेगी अर्थात् ऐसा कोई नहीं चाहेगी। गोपियाँ कृष्ण – प्रेम नहीं छोड़ सकती हैं।

विशेषः

1. गोपिया की विरह दशा का मार्मिक चित्रण है।
2. पिलंम श्रृंगार चित्रण है।
3. ब्रज भाषा का बोधगम्य मधुर रूप है।
4. आकर्षक लयात्मकता और गेयता है।
5. गोपियों का वाक्पटुता का चित्रण है।

"विलग जनि ..... गुन न्यारे" **।। 3 ।।**

शब्दार्थ : विलग – विपरीत, बुरा; जनि – न; कोठरि – कोठरी; सुफलकसुत – अक्रूर; मनिआरे – मणिधर; पखारे – धोए; कालिंदी – यमुना; न्यारे – अनोखा।

संदर्भ – प्रसंग : प्रस्तुत पद 'सूरदास' के 'भ्रमरगीत' से लिया गया है। इसमें उद्धव के गोकुल पहुँच कर गोपियों को उपदेश देने पर गोपियों की उलाहना की मार्मिक प्रस्तुति है। उनका कहना है कि उद्धव का कोई दोष नहीं है। मथुरा काली नगरी है, वहाँ से जो आएगा वह काला ही होगा।

व्याख्या : हे उद्धव ! तुम हम गोपियों की बात को अन्यथा न लेना। तुम तो मथुरा से हमें उपदेश देने आये हो। मथुरा तो काली नगरी है। वहाँ से जो भी आएगा वह काला ही होगा। तुम काले, अक्रूर काले और भँवरे भी काले हैं। उनके साथ कमलनैनी श्याम भी सर्वाधिक आकृर्षक और मनमोहक है। श्याम तो मणिधर सर्प के समान हैं उन्होंने अपने दंश से हम सब को बेहोश कर दिया है। मुझे तो ऐसा लगता है। इन लोगों को काले घड़े से निकाल कर यमुना नदी में धोया गया है। इसीलिए यमुना का पानी भी नीला हो गया है।

सूरदास लिखते हैं कि गोपियों का कथन है कि इन काले लोगों की यही विशेषता है कि ये स्वंय काले और दुःखी है दूसरों को काला और दुःखी कर देते है।

विशेषः

1. विपलभ श्रृंगार का चित्रण है।
2. गोपियों की वाक्पटुता की प्रस्तुति है।
3. 'काजर की कोठरी' , 'सूर स्याम' में अनुप्रास अलंकार है।
4. 'मानहुँ नीज ..... पखारे' में उत्प्रेक्षा अलंकार है।
5. ब्रज भाषा का सहज रूप है।
6. श्रेंष्ठ लयात्मकता और गेयता है।

"अखियाँ हरि .... है। सूखी ।। 4 ।।

शब्दार्थ : दरसन – दर्शन; राँची – हुई; रूखी – सूखी; इकटक – लगातार देखना; जोवत – इन्तजार करना; झूखी – दुखी; पय – दूध; पतूखी – पत्तों का दोना; सिकत – रेत

संदर्भ – प्रसंग: पस्तुत पंक्तियाँ सूरदास के 'भ्रमरगीत' से ली गई है। इसमें गोपियों की हृदयस्पर्शी वियोग – दशा का चित्रण है। वे उद्धव के संदेश के बाद भी बाद भी एक बार कृष्ण का दर्शन करना चाहती है।

व्याख्या : सूरदास लिखते है कि उद्धव के आगमन पर गोपियाँ कहती है कि हे उद्धव, हमारी आँखे अपने प्रभु के दर्शन की प्यासी हैं जो उनके रूप को देखकर मस्त रहती थी वे इन रूखी योग की बातों को कैसे सह पाएंगी। तुम्हारे योग के संदेश से मन और आँखें विह्वल हो रही हैं। तुम से प्रार्थना है कि एकबार, बस केवल उस कान्हा का वह रूप अवश्य दिखवा दो, पत्तों के दोनों में दूध दुह कर पीते हुए।

सूरदास लिखते हैं कि गोपियाँ उद्धव से निवेदन करती हैं कि यह नदी सूख चुकी है, इस रेत में नाव चलाना तुम्हारी जिद्द ही होगी। अर्थात् हम सब योग – साधना के रेत के टीले के समान हैं, जिसमें इसको कोई स्थान नहीं मिल सकता है।

विशेष:

1. गोपियों का कृष्ण के प्रति अनन्य प्रेम है।
2. विप्रलंभ श्रृंगार का सुन्दर चित्रण है।
3. 'पय पियत' और 'सूर सिकत' में अनुप्रास अलंकार है।
4. ब्रज भाषा का बोधगम्य रूप है।
5. आकर्षक लयात्मकता और गेयता है।

Þfux|.k dku --efr ukl h AA 5 AA

शब्दार्थ: सौंह दे – सौगन्ध देकर, बूझति – पूछती है; साँच – सत्य बात; वरन – वर्ण, रंग; वासी – निवासी; गाँसी – कपट की बात; नासी – नष्ट हो गई; मति – बुद्धि

संदर्भ – प्रसंग: प्रस्तुत पंक्तियाँ सूरदास के 'भ्रमर गीत' प्रसंग से उद्द्धत की गयी हैं। इस प्रसंग में कृष्ण के मथुरा प्रवास तथा गोपियों की विरहावस्था का मार्मिक वर्णन किया गया है। उद्धव ब्रज आकर गोपियों को निर्गुण ब्रहन का उपदेश देते हैं। इस पर गोपियां उद्धव से निर्गुण ब्रहन परिचय पूछती हुई उनकी हँसी उड़ा रही हैं, इसी प्रसंग को आगे बढ़ाते हुए सूरदास जी कहते हैं कि –

व्याख्या : गोपियाँ उद्धव से कहती हैं कि जिस निर्गुण ब्रह्म की चर्चा आप इतनी देर से किए जा रहे हैं, ज़रा उसका परिचय तो बता दीजिए। बताइये कि उसका निर्गुण ब्रह्म किस देश का वासी है। हम तो अपने ब्रह्म के स्थान से परिचित हैं और आपको उसकी सभी गतिविधियों से परिचित कर सकती हैं

क्या आप हमें उसका कुछ परिचय बतायेंगे? हम आप की हंसी नही कर रहीं है। हे मधुकर! तुम हमें अपने निर्गुण ब्रह्म का परिचय प्रसन्न मन से हँस–हँस कर दो हम उससे परिचय कराना चाहती हैं। यह बात सच्ची है, हम आपको बना नहीं रही हैं। बताइये कि आप के ब्रह्म का पिता कौन हैं? उसकी माँ कौन है? उसकी पत्नी तथा दासी कौन है? किस तरह का वर्ण है अर्थात् गोरा है या काला है ? तथा यह किस रस में आनन्द लेता है अर्थात उसका कार्य व्यापार कैसा है? वे उद्धव को सचेत करते हुए कहती हैं कि यदि उद्धव तुम हमें अपने ब्रह्म का सही परिचय न देकर इधर – उधर की बात करोगे तो समझ लो तुम खुद ही पाप के भागी बनोंगे अर्थात तुम्हें अपने किए का फल भुगतना पड़ेगा। सूरदास जी कहते हैं कि गोपियाँ के इस सहज प्रश्न उत्तर दे सकने में असमर्थ उद्धव ठगे से रह गये और उनकी सारी बुद्धि नष्ट हो गयी।

विशेषः

1. विप्रलंभ श्रृंगार रस का सुन्दर परिपाक किया गया है।
2. गेयता का गुण विद्यमान हैं।
3. ब्रजभाषा का सुन्दर प्रयोग है।
4. 'समुकाय सौंह' 'की कहियत कौन' में अनुप्रास अलंकार हैं।
5. सुन्दर गेयता और लयात्मकता है।

"बिनु गोपाल ..... ज्यों गंजै ।। 6 ।।

शब्दार्थः बैरिन – दुश्मन; कुंजै – लताएँ; विषम – भयंकर; पुंजै – समूह; धनसार – कपूर; दधिसुत – चाँद; भंजै – मून देती है; लुंजै – अपंग कर देना; बरन – रंग; गुंजै – गुंजा, घुंघची।

संदर्भ – प्रसंग : प्रस्तुत पंक्तियाँ सूरदास के 'भ्रमरगीत' से ली गई है। इसमें गोपियों की विरह व्यथा का हृदय स्पर्शी चित्रण किया गया है। सारा वातावरण उनकी विरह को उद्दीप्त करता हुआ दिखाई देता है।

व्याख्या : सूरदास कहते हैं कि कृष्ण के मथुरा चले जाने और उद्धव के द्वारा उन्हें भुला कर योग – साधना करने के संदेश से उनका विरह अत्यन्त कष्ट दायक हो गया है। बिना गोपाल के ये लताएँ जो आनन्दित करती रही है। अब दुश्मन की तरह कष्ट देने लग गई हैं। तब ये लताएँ मन – मस्तिष्क को शीतलता प्रदान करती हैं। अब तो ये भयंकर ज्वाला उत्पन्न करने वाली बन गई है। पहले सारा वातावरण अच्छा लगता था, अब तो यमुना का बहना, पक्षियों का बोलना, कमल का खिलना और भंवरों का गुंजन सब कुछ निरर्थक प्रतीत होता हैं। शीतलता प्रदान करने वाली, हवा, पानी, कपूर संजीवनी, चांद आदि अब तो सूर्य की तपती किरणों के समान कष्टदायक हो गए हैं। गोपियाँ उद्धव से प्रार्थना करती है कि जाकर कान्हा से कहो कि विरह की दूरी से वार कर हम सब को क्यों घायल कर रहे हैं ? सूरदास लिखते है कि गोपियाँ कहती हैं कि मोहनी मूर्ति की प्रतीक्षा में अंखिया इतनी दुःखी हो गई है कि इनका रंग गुण फल की तरह रक्तिम हो गई हैं।

विशेषः

1. गोपियों की विरह – व्यथा का मार्मिक चित्रण है।

2. विप्रलम्भ श्रृंगार चित्रण है।
3. प्रकृति का उद्दीपन रूप है।
4. 'लता लगति', 'पवन पानि', 'मानु भई भुंजै' में अनुप्रास अलंकार है।
5. ब्रज भाषा का आकर्षक रूप है।

"ऊधौ मन ..... करेंगी सोम" ।। 7 ।।

शब्दार्थः सिधारे – गए; नातरू – नहीं तो; ल्याए – लाए; पठाए – भेजे, सपथ – शपथ

सन्दर्भ – प्रसंगः प्रस्तुत पद 'सूरदास' के 'भ्रमरगीत' से लिया गया है। इसमें वाक्पटु गोपियाँ अपने प्रेम के गंभीर भाव के समक्ष उद्धव को हस्तप्रभ कर देती हैं। उनकी विरह का मार्मिक रूप सामने आता है।

व्याख्याः सूरदास ने गोपियों विचारों को अपने शब्दों में व्यक्त करते हुए लिखा है – हे उद्धव, मन मेरे हाथ में नहीं है। जब कृष्ण ब्रज से मथुरा की ओर गए, उसी समय हमारा मन भी रथ पर बैठ कर साथ – साथ ले गए। अन्यथा तुम्हारे द्वारा इतनी गंभीर इच्छा से लाए गए योग को हम अवश्य अपना लेती । हम सबको तो कृष्ण की करतूत पर विशेष दुःख हो रहा है कि हमारा मन तो स्वंय ले कर चले गए और योग को यहाँ भेजा है।

हे उद्धव यदि हमें अपना मन मिल जाए, तुम ऐसा कुछ उपाय करो, तो निश्चय ही शपथ खा कर, हम सब कह रही हैं कि तुम जो भी कहोगे वही करूंगी।

विशेषः

1. गोपियों की वाक् पटुता का आकर्षक रूप है।
2. विप्रलंभ श्रृंगार है।
3. 'सूर सपथ', 'कहाँ – करेंगी' में अनुप्रास अलंकार है।
4. ब्रज भाषा का सरल और बोधगम्य रूप है।
5. प्रसाद, माधुर्य और ओजगुण सम्पन्न शैली है।
6. आकर्षक लयात्मकता और गेयता है।